सम्मेलन पत्रिका

(शोध–त्रैमासिक)

भाग	:	१०७, संख्या–२
चैत्र–आषाढ़	:	संवत् २०७९
अप्रैल–जून	:	सन् २०२२

प्रधान सम्पादक

विभूति मिश्र

सम्पादक

रामकिशोर शर्मा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज–३

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

सम्पादकीय

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
	आलेख		
१.	देशभक्त-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	श्रीनारायण पाण्डेय	७–१४
२.	निराला के काव्य में दलित चेतना	डॉ० सविताकुमारी श्रीवास्तव	१५–२१
३.	भाषा में अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेणीयता का नया स्वरूप	डॉ० सीमा जैन	२२–२७
४.	प्रसाद काव्य का वैशिष्ट्य	डॉ० कमलेश सिंह	२८–३४
५.	नीरजा माधवकृत 'यमदीप' उपन्यास में स्त्री मुक्ति का संघर्ष	डॉ० ममता खांडल	३५–४२
६.	आदिवासी समाज में अस्मिता तलाशती स्त्री	डॉ० धर्मेन्द्र कुमार	४३–४७
७.	निराला का काव्य-वैविध्य	डॉ० कामिनी	४८–५३
८.	दलित विमर्श में स्त्री-प्रश्न	डॉ० दीपक सिंह	५४–५८
९.	हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथाओं में वर्णित समाज का स्वरूप	अनुराधा शुक्ला	५९–६४
१०.	स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और महादेवी वर्मा का स्त्रीवादी चिन्तन	शिवदत्त	६५–७०
११.	अज्ञेय के यात्रा-वृत्तान्तों में सांस्कृतिक दृष्टि : विदेशी यात्राओं के विशेष सन्दर्भ में	रज्जन प्रसाद शुक्ल	७१–७८
१२.	हिन्दी साहित्य पर गाँधी दर्शन का प्रभाव	किरन मिश्रा	७९–८७
१३.	सखी भावोपासना में राधा बल्लभ सम्प्रदाय का योगदान	खुशबू वर्मा	८८–९३

Scanned with OKEN Scanner

निराला का काव्य-वैविध्य

–डॉ० कामिनी

निराला छायावाद के चार आधार-स्तम्भों में से एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं। उनके विशाल रचना-संसार में मानव-जीवन से लेकर प्रकृति तक के विविध पक्ष अंकित हैं। इसके माध्यम से वे मानव-जीवन के साथ प्रकृति के विविध सम्बन्धों को नए सिरे से परिभाषित करते चलते हैं। अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में रामचन्द्र शुक्ल निराला को बहुवस्तुस्पर्शी प्रतिभा का कवि यों ही नहीं कहते हैं, दरअसल निराला ने केवल विविध विषयों का स्पर्श करते हैं बल्कि अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से उसे अर्थवान भी बनाते चलते हैं।

प्रकृति सम्पूर्ण छायावादी कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। छायावादी कविता में प्रकृति केवल उद्दीपन के रूप में नहीं आती, बल्कि वह हमारे जीवन के एक अभिन्न हिस्से के रूप में आती है। निराला की कविता में प्रकृति के सारे रूप पूरी विवधता के साथ दिखाई पड़ते हैं। प्रकृति यहाँ केवल सौन्दर्य-वर्णन केलिए नहीं है, न ही वह किसी का प्रतीक बनकर मुक्ति पा लेती है, बल्कि वह मनुष्य और प्रकृति के अन्तरसम्बन्धों की सहजता के साथ मौजूद है। निराला प्रकृति को मानव से इस तरह से जोड़ते हैं कि वह शोषण की पूरी प्रक्रिया का भी उद्घाटन करती चलती है। डॉ० राजेन्द्र कुमार के शब्दों में प्रकृति को देखने की दृष्टि जो निराला ने दी, परवर्ती हिन्दी कविता में शोषक-वर्ग के विरुद्ध शोषितों के जीवन के कई ऐसे पहलुओं को उजागर करने के काम आई, जहाँ उनकी आकांक्षाओं और उनकी कोशिशों की अदम्यता छिपी रहती है।"[१] अगर पुष्प से शुरुआत करें तो 'जूही की कली' से लेकर 'पहचाना', दलित कुसुम शेफालिका, ओस पड़ी शरद आयी जैसी कविताएँ वे लिखते हैं। इन कविताओं में निराला विविध पुष्पों का मानवीकरण करते हैं। जूही की कली को निराला की पहली कविता माना जाता है जो कि १९१६ ई० में लिखी गई थी। कहा जाता है कि जब निराला ने यह कविता सरस्वती पत्रिका में छपने के लिए भेजी तो उस पर अश्लीलता का आरोप लगाते हुए बिना छापे ही वापस कर दिया गया। कविता में जूही की कली एक नायिका के रूप में है जिसका प्रेमी पवन किसी दूर देश में है। जब उसे अपनी प्रियतमा का स्मरण होता है तो वह तमाम बाधाओं को पार करता हुआ उसके पास पहुँचता है और उसके साथ रति-क्रीड़ा करता है। अगर गहराई से देखें तो हम समझ पायेंगे कि जूही की कली रीतिकाल की उस नायिका से भिन्न है जिसका जीवन इतना पुरुष केन्द्रित है कि वह इतनी निश्चिन्त होकर कभी सो ही न सकती थी। क्योंकि वहाँ स्वकीया के साथ ही परकीया प्रेम के भी न जाने कितने चित्र हैं। जूही की कली और उसके प्रेमी पवन का यह वर्णन इतना सहज है कि उसमें कहीं अश्लीलता जैसी चीज की गुंजाइश ही नहीं दिखाई पड़ती।

Scanned with OKEN Scanner

बादल निराला के अगले प्रकृति-चित्र के रूप में आता है। उनके यहाँ बादल की अनेक छवियाँ हैं। निराशा का बादल केवल सौन्दर्य-वर्णन के लिए नहीं है, वह कहीं क्रान्ति के प्रतीक के रूप में है, कहीं किसान-जीवन के आधार-रूप में दिखाई पड़ता है तो कहीं प्रतिरोध को व्यक्त करने के साथी के रूपमें उपस्थित है। बादल-राग ६ में निराला बादल और किसान के सम्बन्ध को इस तरह से व्यक्त करते हैं–

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही आधार
ऐ जीवन के पारावार।''[२]

परिमल में संकलित बादल-राग शीर्षक से निराला छः कविताएँ लिखते हैं, इसके अतिरिक्त अलि गिर आये घन पावस के, घन गर्जन से भर दो वन, बादल में आये जीवन-धन, उत्साह, बादल छाये, घन आये घनश्याम न आये, श्याम गगन नव घन मण्डलाए आदि कविताएँ लिखते हैं।

भारतीय समाज के विभिन्न ऋतुओं के साथ जुड़े जीवन के पवितर्न को निराला बखूबी समझते हैं। ऋतुओं के परिवर्तन के पेड़-पौधे सेलेकर पशु-पक्षी तथा मानव-जीवन तक पड़ने वाले प्रभावों को निराला बहुत गहराई से देखते-समझते हैं और उन्हें अपनी कविता में व्यक्त करते हैं। वर्षा और बसन्त ऋतु निराला को बेहद प्रिय हैं। बसन्त समीर, सूखी री यह डाल, सखि बसन्त आ गया, बसन्त की परी के प्रति, गोरे अधर मुस्काई शीर्षक से निराला के बसन्त ऋतु पर कविताएँ लिखी हैं। इसके अतिरिक्त शरद और शिशिर ऋतु पर भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। शरत-पूर्णिमा की विदाई, ओस पड़ी शरद, आई, शुभ्र शरत आयी अम्बर पर, शरत की शुभ्र गन्ध फैली जैसे गीत शरद ऋतु पर तो शिशिर समीर, घोर शिशिर, शिशिर की शर्बरी जैसे गीत शिशिर ऋतु पर लिखे गये हैं। ओस पड़ी शरद आई गीत में निराला ने शरद ऋतु के साथ खिलने वाले अनेक पुष्पों का भी चित्रण किया है। निराला साहित्य के सुधी अध्येता दूधनाथ सिंह निराला के ऋतु-वर्णन के सम्बन्ध में कहते हैं–"अपने समकालीनों में निराला में ऋतुओं का आकर्षण सर्वाधिक है। ऋतु-बिम्बों से होकर कवि बार-बार रचना में वापस आता है। अपने छीजते हुए जीवन और रुकी हुई काव्य-समृद्धि को पाने और प्रवाह देने के लिए ऋतुओं का प्रसंग जिस तरह से निराला ने उठाया है–वह अद्‌भुत है।"[३]

निराला की कविता का अगला विषय स्त्री-जीवन के विवध पक्षों के रूप में आता है। छायावाद से पहले स्त्री का या तो बहुत अवमूल्यन किया गया है और उसे भोग की एक वस्तु के रूप में प्रदर्शित किया गया है या उसे देवी का सिंहासन दे दिया गया है। छायावादी कविता पहली बार स्त्री को समाज द्वारा तय की गई भूमिकाओं माँ, बहन, पुत्री, पत्नी की छवि से बाहर निकालकर केवल स्त्री के रूप में उसका मूल्यांकन करती है। नवजागरण के दौरान स्त्री-जीवन से जुड़ी विविध समस्याओं की ओर

Scanned with OKEN Scanner

सुधारकों का ध्यान गया और उसमें सुधार लाने के विविध प्रयत्न भी किये गये, जिसका प्रभाव छायावादी कविता पर भी दिखाई पड़ता है। अपनी कविता में निराला एक ओर स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हैं वहीं दूसरी ओर स्त्री के सन्दर्भ में गढ़े गये विविध मानकों को तोड़ते भी हैं। भारतीय समाज में विधवा की दारुण-दशा पर विचार करते हुए निराला लिखते हैं–

यह दुःख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,
देव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है!
क्या कभी पोंछे किसी ने अश्रु-जल?
या किया करते रहे सबको विकल?
ओस-कण-सा पल्लवों से झर गया,
जो अश्रु, भारत का उसी से सर गया।''[४]

इसी तरह से बहुविवाह और बेमेल विवाह स्त्री के शोषण का एक बहुत बड़ा कारण रहा है, स्त्री की स्थिति का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यदि वह दस वर्ष की उम्र में भी विधवा हो जाती है तो उसे विभिन्न कठिन नियमों का पालन करना पड़ेगा, जबकि पुरुष चाहे ८० वर्ष का हो जाय तबभी उसे विवाह की छूट है। निराला की दृष्टि वहाँ तक पहुँचती है और वे 'बाबा और नाती' शीर्षक कविता में इन लोगों की खबर लेते दिखाई पड़ते हैं–

''हाय उठाई कैसी मीत
बीस बरस की विधवा बेटी ब्रह्मचारिणी बनी रहे
जहाँ सत्तर पार पिता पर पड़ी प्रेम चाँदनी रहे
क्या आदर्श धरा है।''[५]

स्त्री जीवन का एक दूसरा चित्र 'रानी और कानी' कविता में दिखाई पड़ता है। जिस समाज में स्त्री-जीवन की अन्तिम परिणति विवाह को ही माना जाता हो और विवाह के लिए स्त्री की सुन्दरता एक बड़ा पक्ष हो वहाँ रानी जैसी लड़की के विवाह की चिन्ता बहुत स्वाभाविक हो उठती है। रानी घर के सारे काम कर लेती है लेकिन वह एक आँख से कानी भी है और कुरूप भी है और यही उसका माँ की चिन्ता का कारण है। छायावाद तक के साहित्य में स्त्री के श्रम का मूल्यांकन लगभग नगण्य सा है, निराला पहली बार स्त्री के सौन्दर्य-वर्णन से हटकर उसके श्रम का वर्णन करते दिखाई पड़ते हैं। 'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला स्त्री के श्रम का मूल्यांकन तो करते ही हैं शोषक और शोषित के सम्बन्धों की ओर भी इशारा करते हैं–

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत-मन,

Scanned with OKEN Scanner

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार,
सामने तरुमालिका अट्टालिका प्राकार।''[६]

निराला की प्रेम कविताएँ भी इस दृष्टि से विशिष्ट हैं कि वे स्त्री के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार करती हैं। यहाँ प्रेम स्त्री के जीवन के स्वतन्त्र मूल्यांकन की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही वह जाति, धर्म, सम्प्रदाय की दीवारों को तोड़ने वाला भी है। उनकी एक कविता है प्रेम-संगीत जिसमें निराशा बड़ी ही खूबसूरती से न केवल जाति के बन्धन को तोड़ते दीखते हैं बल्कि सौन्दर्य के बने बनाये मानकों को भी तोड़ते हैं–

बम्हन का लड़का
मैं उसको प्यार करता हूँ
जात की कहारिन वह,
मेरे घरकी है पनहारिन वह,
आती है होते तड़का
उसके पीछे मैं मरता हूँ।
कोयल सी काली, अरे
चाल नहीं उसकी मतवाली
ब्याह नहीं हुआ, तभी भड़का,
दिल मेरा, मैं आहें भरता हूँ।''[७]

निराला प्रेम की गहन अनुभूति के कवि हैं, प्रेम के मार्ग में आने वाली जाति, धर्म, अमीरी, गरीबी के बन्धनों को वे बहुत बेहतर ढंग से समझते हैं और उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। जूही की कली, पंचवटी प्रसंग, प्रगल्भ-प्रेम, रखे, प्रेम के प्रति, प्रेयसी, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, प्रेम संगीत आदि कविताओं में उन्होंने प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है।

सम्पूर्ण छायावादी कविता का मुक्ति की कविता कहा जाता है। यह मुक्ति की आकांक्षा अनेक स्तरों पर है। वह विदेशी शासन से मुक्ति की कामना के साथ रूढ़ियों, परम्पराओं तथा आडम्बरों से भी मुक्ति की कामना है। देश के प्रति प्रेम और स्वाधीनता की आकांक्षा को निराला अनेक कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं। स्वाधीनता पर वे गए रूप पहचान', 'स्वाधीनता पर' आदि कविताएँ लिखते हैं वहीं अनेक कविताओं में वे मातृभूमि की वन्दना करते दिखाई पड़ते हैं। इसके साथ ही निराला अतीत के गौरव-गान के माध्यम से भी अपने देश-प्रेम को प्रकट करते हैं। अतीत के स्वर्णकाल का वर्णन 'दिल्ली' 'यमुना के प्रति' 'जागो फिर एक बार' जैसी कविताओं में निराला ने किया है, और उस अतीत को तत्कालीन अंग्रेजी राज की शासन-पद्धति के विरोध का आधार बनाया है।

निराला की कविदृष्टि शुरू से ही उन सब पर रही है जो दलित-पीड़ित या उपेक्षित हैं। परवर्ती कविता में यह और मुखर रूप से देखा जा सकता है। वे न केवल उनकी स्थिति का वर्णन करते हैं बल्कि उन्हें संघर्ष के लिए तैयार भी करते हैं। जहाँ वे एक ओर बादल के माध्यम से क्रान्ति का सन्देश देते हैं तो कहीं दूसरी ओर महूँगू, झींगुर जैसे पात्रों के माध्यम से इस ओर भी इशारा करते हैं कि अब यह वर्ग जाग चुका है। वह सच्चाई को अच्छी तरह से जानता-समझता है। 'जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ' कविता में वे उन्हें आगे बढ़ने और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए तैयार करते दिखाई पड़ते हैं-

''जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ आओ-आओ
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अँधेरे का ताला
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।''[८]

इस तरह की अनेक कविताओं के माध्यम से निराला अपने समय-समाज पर पैनी नजर रखते हैं और लगातार सवाल भी खड़े करतेहैं। राजे ने अपनी रखवाली की, दगा की, कुत्ता भौंकने लगा, डिप्टी साहब आये, झींगुर डटकर बोला, महंगू मंहगा रहा जैसी कविताएँ इसका प्रमाण हैं। ये कविताएँ स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व लिखी गई कविताएँ थीं। जब तक हमारे देश को स्वतन्त्रता-प्राप्त नहीं हुई थी तब-तक एक सपना था कि स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् असामनता और भेदभाव की जो खाई है वह समाप्त हो जायेगी लेकिन जब स्वतन्त्रता मिली जो उसके साथ विभाजन और दंगे की चोट भी मिली। इसके साथ ही हमारी स्थिति में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। इन सारी चीजों ने निराला को भीतर तक तोड़ दिया था। शायद यही कारण है कि अपने अन्तिम काल में निराला ने ढेर सारे प्रार्थना-गीत या कविताएँ लिखीं, किन्तु ये प्रार्थना-गीत भी केवल आध्यात्मिक दृष्टि से न लिखे जाकर सभी दुःखी और पीड़ित जनों की प्रार्थना हैं।

इस तरह हम देखें तो निराला के रचना-संसार में अद्‌भुत विविधता है। जो विषय उपेक्षित थे निराला ने उन्हें भी अपनी कविता में सम्मानपूर्वक जगह दी। कानी, खजोहरा, गर्म-पकौड़ी, झींगुर डटकर बोला, जलाशय किनारे कुहरी थी, कुकुरमुत्ता, रास्ते के फूल से, विधवा आदि ऐसे विषय हैं जो अभी तक कविता की दृष्टि से उपेक्षित थे। डॉ० प्रेमशंकर के अनुसार-''निराला काव्य की प्रेरक शक्ति के रूप में प्रकृति तथा मानव मुख्य उपादान हैं, और कवि ने उन दोनों को समीप लाने का निरन्तर प्रयास किया।''

सन्दर्भ-सूची

१. कविता का समय-असमय-राजेन्द्र कुमार, साहित्य भण्डार, २०१६, पृ० २२

Scanned with OKEN Scanner

२. निराला रचनावली भाग १–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० १३६
३. निराला : आत्महन्ता आस्था–दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, पृ० २०२
४. निराला रचनावली भाग १–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० ७३
५. निराला रचनावली भाग १–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० ४६
६. निराला रचनावली भाग १–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० ३४३
७. निराला रचनावली भाग २–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० ३५
८. निराला रचनावली भाग २–नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६, पृ० १६७-१६८

पताः–
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी)
राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

Scanned with OKEN Scanner